BAOU Education for All
A++
॥ चैतन्य ॥ CHAITANYA
ISSN : 2582 2802
A Refereed and Peer - Reviewed International e-Journal of Humanities and Social Sciences
by School of Humanities and Social Sciences
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad

नारी उपस्थिति और प्रेमचन्द का कथा साहित्य

डॉ. राम आशीष तिवारी[1]*

सारांश:-

प्रेमचन्द के जेहन में जिस नारी की मूर्ति बसती थी, वह उसमें त्याग-सेवा, करूणा-विद्रोह वाली है, वे शिक्षित और अशिक्षित दोनों हैं। इनके यहां कुल- प्रतिष्ठा को संजोने वाली नारी है तो कुल प्रतिष्ठा के प्रति मुखर विरोध भी है. विरूद्धों के सामंजस्य को बड़े सुन्दर प्रस्तुत किया है, इन्होंने स्थितियों के अनुसार जिस रूप की आवश्यकता हो सकी है, सबका सुन्दर संयोजन किया गया है।

मूल विषय:-

प्रेमचन्द ने कभी यह उद्घोष किया था कि साहित्य और साहित्यकार का काम समाज के पीछे-पीछे चलना नहीं है, बल्कि समाज को राह दिखाते हुये मशाल लेकर आगे-आगे चलना होगा। साहित्यकार को यह विलक्षण संवेदन संस्कार मिला होता है। कि किसी दुखिया को निज भाई बनाता हुआ 'झट उमड़ वेदना का स्वतः स्वाभाविक अधिकारी बनता है। बिना संवेदना के साहित्य कैसा? इलाहबाद के उस पथ पर तो अनेक आवागमन होते रहे होंगें, लेकिन निराला की ही दृष्टि उस तोड़तीपत्थर वाली पर पड़ती है।

किसी भी कवि कथाकार की उदारता और उदात्तता उसको महान बनाती है। प्रेमचन्द इस दृष्टि से ज्यादा प्रभावी हैं। उदारता-उदात्तता तो है ही, लोक ग्रहण लायक सहजता सरलता भी है। साधारणीकरण की सघनता प्रेमचन्द की अद्भुत है, कथा प्रेमचन्द नहीं बढ़ा रहे होते, बल्कि वह स्वयं चल रही होती है सबकुछ पाठक ही करता चलता है, उसकी अपनी कथा है अब प्रेमचन्द इतनी आसानी से सवाल पूछते हैं कि सवाल दिखता ही नहीं, लेकिन पाठक विचलित-बेचैन सवाल हल करने में लग जाता है।

[1] सहायक प्राध्यापक (हिंदी) शाससीय महाविद्यालय लखनपुर, जिला- सरगुजा (छ.ग.) मो. 9451782292

हिन्दी कथा - साहित्य में प्रेमचन्द का आगमन पूर्व और पश्चात् तक एक महान घटना बनी रही जो अब तक वर्तमान है। समस्या समाधान में प्रेमचन्द सिद्ध हैं। समस्या के लिये जितनी मार्मिकता और पन्ने ये देते हैं, समाधान को बहुत कम में समेटते हैं। उत्तरोत्तर समाधान प्रक्रिया कम करते-करते समाप्त ही कर देते हैं, अंततः समाधान का आवरण उतार फेंकते हैं, इसीलिये 'गोदान' और 'कफन' आद्यन्त यथार्थ ही बने रहे। 'गोदान' सरीखा दुखान्त (ट्रेजेजी) दुलर्भ है।

प्रेमचन्द अब तक नारी दुर्दशा देख चुके थे उस पर चिन्तन-मनन- विचार भी कर चुके थे, बस अपनी लेखनी से उसको बाहर लाना था। प्रेमचन्द के हृदय में नारी के प्रति अपूर्व सहानुभूति थी। नारी की पराधीनता को ये गोस्वामी जी इस पंक्ति से गहरे अर्थ निकालते हैं-

"कत विधि सृजी नारी जग माँही पराधीन सपनेहुं सुख नाही।"

“पराधीनता का भाव उस समय था, जब भारत अंग्रेजों का गुलाम था।।”[i]

प्रेमचन्द इस बात को अच्छे से समझ सके थे कि जिस गुलामी की दुहाई पूरी दुनिया दे रही है और भारत का हर व्यक्ति उस गुलामी से बाहर आना चाहता है तो क्या युग-युग की गुलाम नारी जिसे हमने गुलाम बनाया है, क्या देश की आजादी के बाद भी उसकी दशा में कोई बदलाव नहीं होगा ? इन सवालों के जवाब में प्रेमचन्द अपनी पटकथा और पृष्ठभूमि तैयार करते हैं। प्रेमचन्द जी अपनी कथा को नारी से संबंधित हर कुप्रथा और समस्यों पर लिखा- बोला है। तमाम शीर्षक भी दिये जैसे निर्मला, प्रेमा, आदि। नारी स्थिति और समस्या के प्रति सचेत होने के लिये समाज और परिवार के लिये किसी उपदेश की नहीं बल्कि किसी संवेदनात्मक कृति को सामने रखा जाये, जिसका दूरगामी प्रभाव पड़ सके।

कोई भी स्त्री क्या कभी वेश्या बनना चाहेगी ? क्या किसी भी स्त्री के लिये इससे यातनापूर्ण जीवन हो सकता है ? इसके लिये "प्रेमचन्द ने वेश्यावृत्ति को नहीं बल्कि वेश्या जीवन को अपना विषय बनाया है। प्रेमचन्द ने उसके साथ अपनी सहानुभूति ही नहीं दिखाई है, बल्कि उन तथ्यों का पर्दाफास किया है, जो मध्यवर्गीय बहू-बेटियों पर नहीं स्वयं समाज पर है।[ii]”

समाज किसी को इतना निकम्मा बेदर्द कैसे बना सकती है कि उसे प्रसव वेदना में तड़पती अपनी पत्नी का मर जाना ही ठीक लग रहा है। "मरना ही है तो जल्दी मर क्यूं नहीं जाती[iii]" आगे "सबेरे माधव ने कोठरी में जाके देखा तो उसकी स्त्री ठंडी हो गई थी। उसके मुंह पर मख्खियया मिनक रही थी। पथराई हुई आंखे ऊपर टंगी हुई थी। सारी देह धूल से लथपथ हो रही है। उसके पेट में बच्चा मर गया था[iv]। मौत का ऐसा वीभत्स और दर्दनाक चित्रण हो सकता है क्या ?

ऐसा प्रेमचन्द ही कर सकते हैं।

बूढापा सबको आनी है, यह जानते हुए भी आंख पर पर्दा लगाने की कला काबिलेगौर होती है। बूढ़ी काकी की आर्तनाद को प्रेमचन्द गहरे पहचान सके, ऐसी मार्मिकता कि किसी के भी रोंगटे खड़े हो जाय, लेकिन अपने पर आते ही सबको यह भ्रम बना रहता है कि मेरा बुढ़ापा शायद कभी न आये, दो दृश्य देखिए "यदि द्वार पर भला आदमी बैठा होता और बूढ़ी काकी उस समय अपना राग अलापने लगती तो वह आग हो जाते और घर में आकर उन्हें जोर से डांटते, काकी चीख मार कर रोती, परन्तु यह बात प्रसिद्ध थी कि वह केवल खाने के लिये रोती है, अतएव उनके संताप और आर्तनाद पर कोई ध्यान नहीं देता था।[v]" भविष्य के बुढ़ापे का ऐसा वीभत्स स्वरूप वर्तमान में दिखे तो किसकी आत्मा नहीं हिल जायेगी। एक और दृश्य देखिए-

"ठीक उसी समय रूपा की आंखे खुली। उसे मालूम हुआ कि लड़की मेरे पास नहीं है। वह चौकी..... क्या देखती है कि लड़की जूठे पत्तलों के पास चुपचाप खड़ी है और बूढ़ी काकी पत्तलों पर से पूड़ियों के टुकड़े उठा-उठाकर खा रही है। रूपा का हृदय सन्न हो गया.....। रूपा को क्रोध न आया। शोक के सम्मुख क्रोध कहां ? करूणा और भय से उसकी आंखे भर आयी। परमात्मा मेरे बच्चों पर दया करो। इस अधर्म का दण्ड मुझे दो, नहीं तो मेरा सत्यानाश हो जायेगा[vi]" प्रेमचन्द के यहां नारी पुरुषों के समान आर्थिक स्वतंत्र भी हैं, बौद्धिक प्रतिद्वन्दी भी हैं और भावुक प्रेमिका भी वह पुरुषों के साथ मंच साझा करती है, शिकार करती है, बड़े-बड़े आयोजनों में भाग लेती है।

'गोदान' की मालती कुछ ऐसी ही नारी पात्र है। मालती विदेश से डाक्टरी की पढ़ाई करके आई है, वह स्त्री पुरूष को समान अधिकारी और समान सामर्थ का मानती है। राजनीति हो या सामाजिक मामला हर स्थान पर नारी पुरुष के समान धरातल पर उपस्थित है। प्रेम संबंध में भी उसके विचार स्वतंत्र हैं, हालांकि इस प्रेम स्वतंत्रता में मालती इतनी अधिक स्वतंत्र हो जाती है कि मानो विनोद के लिये किसी विवाहित पुरुष को पकड़ सकती है। इस क्रम में वह भूल जाती है कि उस विवाहित पुरूष की एक विवाहिता पत्नी भी होगी, जो इस सन्ताप में जल भी रही होगी। गोविन्दी मेहता से कहती है- "मुझे अब अपना जीवन असह हो गया है। मुझसे अब तक जितनी तपस्या हो सकी मैंने की, लेकिन अब नहीं सहा जाता। मालती मेरा सर्वनाश किए डालती है। मैं अपने किसी शस्त्र से उस पर विजय नहीं पा सकी।[vii]"

प्रेमचन्द ने गोदान में धनिया के माध्यम से नारी का विद्रोही रूप भी सामने खड़ा किया। असमतल सामाजिक रूढ़ियों पर वह विरोध करती है। वह घृणा करती है कि जिस नियम के तहत हम फला काम नहीं कर सकते, उसी काम को बड़े लोग धूम-धाम से करते हैं। जब हम उनके सामाजिक और धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करते तो वे भी हमारे व्यक्तिगत मामलों

में टांग न अड़ायें धनिया को कुल प्रतिष्ठा से ज्यादा मानवीय संबंध प्यारे हैं। वह संवेदनशील विद्रोही नारी है विद्रोह केवल उसी चीज का करती है, जहां मानवीयता बची रहे।

साहित्य की मूल चिन्ता न्याय की होती है। उसी न्याय के लिये आदिकवि ने पहली पंक्ति कही थी। क्रौंच जोड़े में से नर क्रौंच की हत्या ने आदि कवि के हृदय में क्षोभ और करुणा उत्पन्न किया। क्षोभ उस बाधिक के प्रति और करूणा उस बचे क्रौंच के विलाप पर अनायास कविता फूट पड़ी। भिक्षुक को तो सबने देखा ही होगा, लेकिन संवेदन दृष्टि तो निराला जी की ही पड़ी। परिस्थितिवश धनिया झुनिया को अपने घर में शरण देती है। पहले तो मनुष्य स्वभावतः वह उसे बहुत झिड़कती और घर से निकालने को होती है, लेकिन करुणा के वशीभूत जब होती है तो उसी झुनिया के लिये लड़ बैठती है सब से धनिया के ही शब्दों में "हमको कुल प्रतिष्ठा इतनी प्यारी नहीं है महाराज, कि उसके पीछे एक जीव की हत्या कर डालते..... बड़े आदमियों को अपनी नाक दूसरों की जान से प्यारी होगी, हमें तो अपनी नाक इतनी प्यारी नहीं।"[viii]

दहेज प्रथा पर सोना मुखर हो जाती है। समाज का एक ऐसा अभिशाप है, जिसमें एक पूरा परिवार पिस जाता है। इस प्रथा की व्यवस्था के कारण ही लड़की परिवार पर बोझ बन जाती है। हर बेटी अपने पिता की सम्पन्नता और दरिद्रता से परिचित होती है, उसकी क्षमता को पहचानती है दरिद्र बाप की बेटी अपने पिता की पल-पल की परिस्थिति को कैसे भूल सकती है सोना नहीं चाहती कि उसके पिता उसकी शादी के लिये कर्ज में फंसे वह एक निश्चय करती है कि वह तभी शादी के लिये हां करेगी, जब दहेज का एक पैसा नहीं लिया जायेगा। वह कहती है- मां-बाप ने मर-मरके पाला-पोसा उसका बदला क्या वही है कि उनके घर से जाने लगूं तो उन्हें कर्ज से लादती जाऊँ।[ix]"

प्रेमचन्द बार-बार यह उद्घोषणा करते हैं कि स्त्री-पुरुष एक ही धरातल पर हों। दार्शनिक प्रेमचन्द जब मेहता के बहाने बोलते हैं तो कहते हैं कि पुरुषों में स्त्रियों के गुण आ जायें तो पुरुष देवता बन जाएं। प्रेमचन्द को लगता है कि हर स्त्री को यह जानने का अधिकार है कि उसका अधिकार क्या-क्या है ? वह यह कहते हैं कि जब स्त्री शिक्षित होगी तभी उसे अपने अधिकारों के बारे में जानकारी मिलेगी। प्रेमचन्द का मानना था कि "स्त्री का पूर्ण विकास तभी सम्भव है, जब उसे पुरूषवत सारे अधिकार प्राप्त हों।[x]"

निष्कर्ष :-

प्रेमचन्द का साहित्य इनके समस्त युग का प्रतिनिधित्व करता है। प्रेमचन्द ने नारी के हर रूप को सामने खड़ा किया है। नारी का विद्रोही स्वर भी, नारी का करूणामयी चेहरा भी। नारी का पुरूषों के समान धरातल पर तर्क-वितर्क और सहभागिता भी। कुलमिलाकर जिस पारदर्शी दृष्टि

की आवश्यकता नारी समस्या और सबलता को दिखाने की थी, प्रेमचन्द ने उसके साथ पूरा न्याय किया है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :-

- बालकांड श्रीरामचरितमानस गोस्वामी तुलसीदास-गीताप्रेस गोरखपुर,
- प्रेम मंजूषा (अमृत राय द्वारा चयनित प्रेमचन्द की 16 सर्वश्रेष्ठ कहानियां) कला मंदिर, 1687, नई सड़क दिल्ली, पृष्ठ-142
- आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास- डॉ. बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, नई दिल्ली. पटना- 2007, पृष्ठ-194
- प्रेम मंजूषा (अमृत राय द्वारा चयनित प्रेमचन्द की 16 सर्वश्रेष्ठ कहानियां) कला मंदिर, 1687, नई सड़क दिल्ली, पृष्ठ-144
- प्रेम मंजूषा (अमृत राय द्वारा चयनित प्रेमचन्द की 16 सर्वश्रेष्ठ कहानिया) कला मंदिर,1687, नई सड़क दिल्ली, पृष्ठ-39
- प्रेम मंजूषा (अमृत राय द्वारा चयनित प्रेमचन्द की 16 सर्वश्रेष्ठ कहानिया) कला मंदिर 1687, नई सड़क दिल्ली, पृष्ठ-44
- गोदान- प्रेमचन्द अनुराग प्रकाशन वाराणसी-2011, पृष्ठ-156-157 गोदान - प्रेमचन्द, अनुराग प्रकाशन, वाराणसी-2011, पृष्ठ-98
- गोदान -प्रेमचन्द, अनुराग प्रकाशन, वाराणसी-2011, पृष्ठ-206
- गोदान -प्रेमचन्द, अनुराग प्रकाशन, वाराणसी-2011, पृष्ठ-206
- प्रेमचन्द के नारी पात्र, ओमप्रकाश अवस्थी, नेशनल पब्लिश